दलित साहित्य महोत्सव - 2019

3-4 फरवरी, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दलित साहित्य महोत्सव क्यों ?

इस कार्यक्रम की परिकल्पना मुख्य रूप से अम्बेडकरवादी वैचारिकी एवं अन्य सकारात्मक परिवर्तनकामी वैचारिकी-समूह को आधार बनाकर की गयी है। जो सहयोगी व्यक्ति-संगठन-समूह सामाजिक न्याय की अवधारणा और सकारात्मक परिवर्तन में भरोसा रखते हैं वे इस परिकल्पना-रूपरेखा के सहयोगी-सहभागी हो सकते हैं। आज जाति-पूंजी आधारित वर्चस्ववादी घराने साहित्य को कब्ज़ाने की होड़ में भारत के अलग-अलग प्रांत में प्रादेशिक भाषाओं में '**लिटरेचर-कल्चरल फेस्ट**' आयोजित कर रहे हैं। इन जाति-पूंजी वर्चस्ववादी घरानों की यह समझ-मंशा बनी हुई है कि साहित्य-संस्कृति-कला, पढ़े-लिखे और आमजन, व्यक्ति-समाज-समूह को जागरूक-चिंतनशील, संवेदनशील बनाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए ये जाति-पूंजी-वर्चस्ववादी वर्ग अब साहित्य-संस्कृति-कला पर भी अपना आधिपत्य बना लेना चाहते हैं। इन वर्चस्ववादी ताकतों ने मीडिया, सामाजिक-सांस्कृतिक समूह, राजनीतिक पार्टियों और अन्य परिवर्तनकामी संगठनों-समूहों में तो घुसपैठ करके एक हद तक अपना आधिपत्य स्थापित कर ही लिया है और उनके परिवर्तनकामी मूल्यों को कुंद कर दिया है। साहित्य-संस्कृति-कला ही उनकी नज़र में वह क्षेत्र थे जहां उसे मुनाफा नज़र नहीं आता था। इसीलिए ये क्षेत्र इनकी ज़द में आने से बचे रह गये थे। लेकिन अब इन जाति वर्चस्ववादी ताकतों ने सचेतन रूप से रचनाकारों-संस्कृतिकर्मियों में पैदा हुए या पैदा किये गए अवसरवादी-सुविधाभोगी लिप्साओं-महत्त्वकांक्षाओं को भांपकर साहित्य के परिवर्तनकारी मूल्य-संस्कृति को भोथरा करने की कोशिशें शुरू कर दी है। इसी का परिणाम है कि आज जगह-जगह पर जाति-पूंजीवादी-लैंगिक मूल्यों से संचालित '**लिटरेचर-कल्चरल फेस्ट**' आयोजित हो रहें हैं। इन आयोजनों में वे साहित्य के सामाजिक सरोकारों या सकारात्मक भूमिका पर संवाद न करके वर्तमान दौर के छोटी-छोटी अस्मितावादी साहित्यिक-सांस्कृतिक धारा को समाज को तोड़ने वाली धारा बताते हैं। अस्मितावादी साहित्य को साम्राज्यवादी साज़िश का परिणाम कहकर प्रचारित करते हैं वे साहित्य को केवल मनोरंजन की वस्तु या उत्पाद बना देना चाहते हैं।

ऐसे में हम सामाजिक न्याय और समतावादी समाज में भरोसा रखने वाले हाशियों के समूह और उनके पक्षकारों का ये कार्यभार बन जाता है कि हम अपने साहित्य-संस्कृति-कला के न्याय, समतावादी मूल्यों की रक्षा करें और उसे संरक्षित करें। परिवर्तनकामी और सामाजिक न्याय में भरोसा रखने वाले साहित्यकारों-संस्कृतिकर्मी-कलाकारों को एकजुट करके साहित्य की दलित-जनोन्मुखी परिवर्तनकामी समानांतर धारा को मजबूत करें। यह परिवर्तनकामी धारा ही भविष्य में समाज-समुदाय की बेहतर, न्यायवादी परिकल्पना-रूपरेखा का आधार बन सकती है।

दलित शब्द वेदना-प्रतिरोध-संघर्ष का वाहक

हमारा स्पष्ट रूप से मानना है कि 'दलित' शब्द दलित समुदाय की वेदना, संघर्ष और प्रतिरोधी मूल्यसंस्कृति का वाहक है। यह शब्द अब अन्याय के प्रतिकार और संघर्ष का प्रतीक के रूप में परिवर्तित चुका है। यह शब्द हाशियाकृत समुदायों के अन्याय-उत्पीड़न, पीड़ा-वेदना और प्रतिरोध-संघर्ष का एक ध्वज है और उनकी आत्मा का गान है। यह एक ऐसा अम्ब्रेला बन चुका है जिसके नीचे तमाम हाशियाकृत अस्मिता, समूह और वर्ग शामिल हो रहे हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे। हम यहाँ 'दलित' शब्द को व्यापकता प्रदान करते हुए इसके अंतर्गत दलित आदिवासी-घुमंतू जनजाति, स्त्री-हिजड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक (पसमांदा-दलित ईसाई सहित) मजदूर-किसान (सर्वहारा) और तमाम वंचित समुदाय, अन्य हाशियाकृत अस्मिताओं को भी दलित शब्द की परिधि में शामिल करने की उद्घोषणा करते हैं। भविष्य के लिए हम दलित शब्द के द्वारा ही अन्य हाशियाकृत अस्मिताएं, वंचित समुदाय और सर्वहारा के अधिकारों के लिए संघर्ष करने की अपनी समझ को यहाँ प्रस्तावित कर रहें हैं। क्योंकि भारत में जो सर्वहारा है यह उपर्युक्त परिभाषित दलित समुदाय ही है। ये उपर्युक्त समुदाय पूंजीवाद के द्वारा भी शोषित हैं और ब्राह्मणवाद से भी। इसीलिए डॉ आंबेडकर ने भारत में दो शत्रु चिन्हित किये थे ब्राह्मणवाद और पूंजीवाद। हम उन्हीं के विचार को यहाँ विस्तार दे रहे हैं।

दलित शब्द के स्थान पर कुछ सहयोगी संगठन बहुजन या अम्बेडकरवादी शब्द को अपनाने का आग्रह करते हैं उनसे हमारी कोई गहरी असहमति नहीं है। बस ये अनुरोध है कि जिस शब्द के साथ या जिस शब्द को लेकर दलित समुदाय ने इंसानी पहचान, गरिमा और सामजिक न्याय की एक लम्बी लड़ाई लड़ी है संघर्ष किया है वह शब्द अब उनकी पहचान बन चुका है। उनकी रगों में घुल गया है। आत्मा में रच बस गया है। दिलों की धड़कन बन उसमें महकता है। इस शब्द को देशज-अंतर्राष्ट्रीय पहचान भी मिल चुकी है। चिंतन-वैचारिकी, शिक्षा-साहित्य संस्थानों का हिस्सा हो चुका है दलित शब्द। इस शब्द को पहचान दिलाने में न जाने कितनी कुर्बानियां दी हैं हमारे संघर्षी पुरखों ने। इसलिए इस शब्द की गहराई और व्यापकता को हम नए सिरे से परिभाषित करें पर दलित शब्द को अपदस्थ कर अन्य शब्द को इसके स्थान पर रखने का आग्रह न करें। चाहें तो बतौर राजनितिक शब्दावली सहयोगी साथी आन्दोलनकर्मी किसी अन्य शब्द के गठन और प्रयोग के लिए स्वतंत्र हैं।

हम इस प्रथम 'दलित लिटरेचर फेस्टिवल'-2019 (दलित साहित्य महोत्सव - 2019) का मुख्य थीम 'दलित' शब्द ही रख रहें हैं। दलित शब्द की यह परिभाषा, इसकी व्यापकता-गहराई और आने वाले विगत वर्षों में हमारे द्वारा आयोजित होने वाले अन्य कार्यक्रमों में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देगी।

दलित साहित्य एक वैकल्पिक धारा

साहित्य में इतिहास में दलित समुदाय का दर्द उसकी वेदना कहीं दर्ज नहीं थी। उसके साथ होते अन्याय का कहीं भी उल्लेख नहीं था। न वह समाज में एक इंसान था और न ही साहित्य-इतिहास में। दलित समुदाय समाज से भी अनुपस्थित था और साहित्य में भी उपेक्षा का दंश भोग रहा था। वह गरीब, मजदूर, मेहनतकश के रूप में दर्ज होता रहा लेकिन

एक अछूत के रूप में उसके अन्याय को किसी ने भी दर्ज करने का बीड़ा नहीं उठाया। समय-समय पर वर्ण-जाति उत्पीडन के खिलाफ कुछ आवाजें हमेशा ही उठती रहीं हैं लेकिन उन आवाजों को गरीब-मेहनत करने वालों के दुखी जन की आवाज़ कहकर अनदेखी की गयी। दलित समुदाय खुद बेजुबान था। उसको साजिशन अक्षर ज्ञान से दूर रखा गया। उसे एक बेहतर सेवक और कर्मठ दास बनाया गया। उसे पूर्वजन्मों के बुरे कर्म की कल्पना के आधार पर अछूत बना दिया गया। दलित समुदाय समाज को साफ़-सुन्दर बनाने की ज़रूरत तो था लेकिन इंसानी गरिमा, मनुष्यता और न्याय जैसे भाव जैसे उसके लिए बने ही नहीं थे। वह मंदिर नहीं जा सकता था। उसका स्कूल में घुसना वर्जित था। तालाब कुंओं से पानी नहीं ले सकता था। वह गाँव नगर में निवास नहीं कर सकता था। अपना दुःख-दर्द किसी को कह नहीं सकता था। असल में तो दलित इस समाज-देश, धरती पर एक इंसान ही नहीं माना गया। यह इस भारतीय जाति-सामंती-वर्चस्ववादी समाज की मानसिकता थी। इस मानसिकता को बनाने में ब्राह्मणवादी धर्मग्रंथों और नकारात्मक चिंतनधारा की एक बड़ी भूमिका थी। 'ईश्वर के सामने सब समान हैं' जैसे शब्दों का प्रपंच रचा गया लेकिन उसी ईश्वर द्वारा बनाये गए समाज में सब समान नहीं हो सकते थे। मेहनत करने वाला अछूत था और उपभोग करने वाला सवर्ण। ये अजीब तरह का तर्क था। इस मानसिकता का भारतीय दलित संतसाहित्य आन्दोलन ने पुरजोर विरोध किया। अपने लेखन से उन्होंने इस जाति-वर्चस्ववादी समाज के अन्याय को सामने लाने की कोशिश की। उसके बाद हम देखतें हैं कि महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले ने अपने लेखन और शिक्षालय खोलकर शिक्षा पर ब्राह्मणवादी वर्चस्व के एकाधिकार को ही चुनौती दे डाली। तत्पश्चात दलित मुक्ति आन्दोलन के लिए डॉ आंबेडकर ने एक मुकम्मल वैचारिकी का निर्माण किया। उन्होंने अपने समय के जाति-पूंजी-वर्चस्ववादी चिंतकों को ही बेनकाब नहीं किया बल्कि मानववादी और दलितों के हितैषी कहलाने वाले भारत मुक्ति आन्दोलन के नायकों की भी अच्छी खबर ली। डॉ आम्बेडकर के आन्दोलन और लेखन ने भारत में दलित मुक्ति आन्दोलन का सूत्रपात किया। इसके अलावा दलित समुदाय के बहुत से चिन्तक नायक रहे जिसे इस जाति-पूंजी-वर्चस्ववादी समाज ने अनदेखा किया और कहीं दर्ज भी नहीं होने दिया। इन्हीं में से कुछेक बाद में इतिहास के नायाब खंडहरों से खोज निकाले गए। आदिवासी नायक बिरसा मुंडा, पंजाब में बाबू मंगूराम, उत्तरप्रदेश में स्वामी अछुतानंद, महाराष्ट्र में संत गाडगे और भील समाज में शिक्षा की जागृति फैलाने वाले घुमंतू जनजाति के गोबिंद गुरु, गुरु घासीदास। दक्षिण भारत में पेरियार ने तो जैसे क्रान्ति की अलख ही जला दी थी। इसीलिए पेरियार को आधुनिक युग का सुकरात भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त भी बहुत से संतों-चिंतकों-आन्दोलनकर्मियों ने दलित समुदाय को इंसानी गरिमा-सम्मान दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

यह एक प्रकार से संक्षेप में दलित साहित्य की पूर्वपीठिका है। दलित साहित्य को एक आन्दोलन की शक्ल देने में महाराष्ट्र के दलित पेंथर और अस्मितादर्श का महत्त्वपूर्ण योगदान है। हालांकि उत्तर भारत में भी बहुत से लेखकों ने दलित साहित्य लेखन की शुरुआत कर दी थी लेकिन उसमें अम्बेडकरवादी वैचारिकी का अभाव दिखाई देता है।

दलित साहित्य ने मुख्य रूप से एक दलित को सबसे पहले मनुष्य के रूप में दर्ज किया। फिर उसकी वेदना दर्द अन्याय को दर्ज किया। तत्पश्चात दलित साहित्य ने अपने वैचारिक लेखन से यह बताया की अब तक का साहित्य-कला-

संस्कृति और भाषा का इतिहास जाति-वर्चस्ववादी विचारधारा को बनाये रखने का इतिहास हैं और दलित साहित्य इसे पूरी तरह से खारिज करता है। फिर दलित साहित्य ने इस जातिवादी सत्ताओं द्वारा सतायी गयी अपनी जैसी अस्मिताओं की पहचान की और उन्हें भी दलित साहित्य के साथ लाने का प्रयास किया। इनमें आदिवासी, घुमंतू जनजाति, स्त्री, पसमांदा दलित, अल्पसंख्यक और वंचित समुदाय इत्यादि प्रमुख हैं।

दलित साहित्य मुख्य रूप से यह मानता है कि समानता, न्याय, बंधुत्व के मूल्यों पर आधारित एक बेहतर समाज बने। जो किसी भी प्रकार के जाति-धर्म-लिंग-क्षेत्र-भाषा-संस्कृति के भेदभाव पर आधारित न हों। जहां एक इंसान दूसरे इंसान का सम्मान करें। अगर ऐसा समाज बने तो यही एक मनुष्य का सकारात्मक सम्मान है।

दलित साहित्य का वर्तमान

मौजूदा समय में दलित साहित्य भारत की सभी भाषाओं में लिखा जा रहा है। सभी भाषाओं में लिखे गए दलित साहित्य में दलित समुदाय के उत्पीड़न की एक जैसी ही महाकारुणिक गाथा है जिसको लेकर कभी कोई महाकाव्य भी नहीं लिखा गया। भारतीय समाज के सभी प्रदेशों के धर्म-समुदायों-वर्गों में आज भी जातिवादी मूल्य-मानसिकता मौजूद है। इसीलिए सभी भाषाओं में लिखे गए दलित साहित्य में इस अन्याय-उत्पीड़न की गूंज सुनाई देती है। यहाँ एक बात उल्लेखनीय है कि दलित साहित्य आज भारत में मुख्यधारा का साहित्य बन चुका है जिसकी गूंज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सुनाई देने लगी है। उसके बावजूद जाति-पूंजी-वर्चस्ववादी साहित्य-कला-संस्कृति संस्थान आज भी सचेतन तौर पर दलित साहित्य-कला संस्कृति की अनदेखी करते हैं। उन्होंने सभी संस्थानों पर अपना आधिपत्य बनाया हुआ है। वे इन संस्थानों के संसाधनों का इस्तेमाल अभी भी जाति-पूंजी-मूल्यों को आधार बनाकार लिखे-सृजन किये गए साहित्य-कला-संस्कृति को ही प्रोत्साहित करने में दलित-मेहनतकश की गाढ़ी कमाई झोंक रहे हैं।

हमारा मानना है कि यह दलित लिटरेचर फेस्टिवल उस समानांतर-परिवर्तनकामी साहित्य की धारा का सूत्रपात करेगा जिससे दलित, आदिवासी, घुमंतू, स्त्री, अल्पसंख्यक और पसमांदा समुदाय के लेखन-कला-संस्कृति को एक साथ, एक मंच पर ला सके। यही हमारा ध्येय है और यहीं हमारा उद्देश्य। यह पहला 'दलित लिटरेचर फेस्टिवल' उसी व्यापक परियोजना का पहला कदम है। हम उम्मीद करते हैं कि सभी सकारात्मक-न्यायपसंद साथियों-समूहों के सहयोग से यह कदम प्रतिवर्ष आगे बढ़ेगा और अपने मंतव्य में कामयाब होगा।

जय भीम !

---

*अधिक जानकारी के लिए **www.dalitlitfest.org** वेबसाइट पर जायें, या **dalitlitfest@gmail.com** पर ईमेल करें, या **9810526252, 9891438166, 9999093364, 9958797409** पर संपर्क करें*